SHIKSHA SAMVAD
International Open Access Peer-Reviewed & Refereed
Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
Volume-1, Issue-4, June- 2024
www.shikshasamvad.com

"श्री अरविन्द का शैक्षिक दर्शन"

डॉ० अवन्तिका मिश्रा
प्राचार्या
वेदांत कॉलेज ऑफ़ एजुकेशन
गढ़मुक्तेश्वर हापुड़

प्रस्तावना : *महायोगी कर्मयोगी सिद्धपुरुष दिव्यात्मा विलक्षण बुद्धिजीवी राष्ट्रीयता के अग्रदूत व भारतीय संस्कृति के अनन्य उपासक महर्षि श्री अरविन्द का व्यक्तित्व अत्यन्त विराट है शिक्षा के क्षेत्र में उनका अपूर्व योगदान है उनकी महानता के विषय में पी०टी०राजू ने लिखा "भारत के सभी दार्शनिकों में श्री अरविन्द ही एकमात्र ऐसे व्यक्तित्व है जो एक योगी तथा एक दार्शनिक दोनो रूपों में प्रसिद्ध है" महायोगी श्री अरविन्द का जन्म 15 अगस्त सन् 1872 को हुआ था. इनके पिता श्री कृष्णधन घोष कलकत्ता के प्रसिद्ध डॉक्टर थे व पाश्चात्य संस्कृति के प्रशंसक थे। शिक्षा दीक्षा के लिये वर्ष की अल्प आयु में ही इन्हें इंग्लैंड भेज दिया गया था। श्री अरविन्द ने वही पर शिक्षा प्राप्त करते हुये महान लेखको एवं कवियों की मौलिक रचनाओं का अध्ययन करने के लिये चीक तथा लैटिन भाषा पर ही पूर्ण अधिकार प्राप्त नही किया वरन फ्रेंच जर्मन तथा इटैलियन आदि अनेक भारतीय स्वतन्त्रता आंदोलन जोरो पर था उनके ऊपर भारतीय स्वतन्त्रता आंदोलन व आयरलैंड के प्रसिद्ध आंदोलनकारी नेता पारलेन का गहरा प्रभाव पड़ा और ये सन् 1893 में भारत वापस आकर भारतीय स्वतन्त्रता आंदोलन में सक्रिय हो गये| यही आने पर उन्होंने भारतीय दर्शन व संस्कृति का अध्ययन किया। 10 अप्रैल 1908 को जिला जज किंग्सफोर्ड की गाड़ी पर बम फेंकने के आरोप में उन्हें अलीपुर जेल मे बन्द कर दिया गया सुप्रसिद्ध वकील देशबन्धु चितरंजन दास की कुशल पैरवी से उन्हें 01 वर्ष बाद जेल से मुक्त कर दिया गया।जेल में रहने का एक वर्ष का समय उनके जीवन में परिवर्तन ले आया यहाँ उन्हें कुछ अध्यात्मिक अनुभव हुये भगवद् गीता का उन्होने मनन किया जेल से बहार आकर उन्होने स्वामी ग्रहमानंद व विष्णुप्रभाकर नामक योगी से भेट की इसके पश्चात उन्होंने एक खुला पत्र अपने साप्ताहिक कर्मयोगिन में लिखा और फिर उस पत्र को बन्द करके पाण्डिचेरी चले गये और वहाँ जाकर सन् 1910 में पत्र अरविन्द आश्रम की स्थापना की जो सन् 1943 में श्री अरविन्द अर्न्तराष्ट्रीय शिक्षा केन्द्र के रूप में विकसित हुआ श्री अरविन्द ने अपना शेष जीवन इसी आश्रम मे रहते हुये अध्यात्मिक योग साधना मे व्यतीत किया इस प्रकार श्री अरविन्द राजनैतिक कार्यकर्ता से एक दार्शनिक के रूप में उन्होने जनता के समक्ष शिक्षा धर्म, योग तथा ब्रहमचर्य आदि विषयो पर अपने विचार प्रस्तुत किये सन् 1950 में महायोगी श्री अरविन्द ने अंतिम समाधि ली।*

श्री अरविन्द का जीवन दर्शन - श्री अरविन्द के जीवन दर्शन पर वेद उपनिषद एवं गीता का प्रमुख प्रभाव रहा वे जीवन में अध्यात्मिक साधना, योग तथा ब्रहमचर्य को विशेष महत्व देते हुये विकास के सिद्धांत में विश्वास करते थे। इन्होने गीता के कर्म योग एवं ध्यानयोग की वैज्ञानिक व्याख्या की है इनकी पुष्टि से मानव एवं दिव्य शक्ति का संयोग ही योग है। दूसरे शब्दो में योग वह साधन है जिससे मानव दिव्य शक्ति की अनूभूति करता है। श्री अरविन्द मानव को योग द्वारा आत्मतत्व की अनुभूति कर ब्रहमलीन होने का उपदेश नही देते थे, वे तो उसके द्वारा सम्पूर्ण मानव जाति को अज्ञान अंधकार व मृत्यु से ज्ञान, प्रकाश व अमृत्व की ओर ले जाना चाहते थे इसीलिये इनकी विचारधारा को सर्वांग योग दर्शन कहा जाता है। इनके अनुसार आत्मा व प्रकृति दोनों सत्य है प्रकृति प्राण शक्ति को जन्म देती है, प्राण शक्ति से मन उच्चस्तरीय है ,मन अपने से उच्चस्तरीय अतिमन की ओर जाता है और उच्चतर अतिमन का यह क्रम (सत् चित् आनन्द) की प्राप्ति तक जारी रहता है इस स्तर पर पहुँचकर मानव ज्ञान से अधिक ज्ञान, प्रकाश से अधिक प्रकाश की ओर बढ़ता है इससे उसे आश्चर्यजनक शान्ति एवं वास्तविक सुख का आनन्द प्राप्त होते हुये सृष्टि के रहस्य तथा व्याप्त सत्यता का पूर्ण ज्ञान हो जाता है। वास्तव में श्री अरविन्द का दर्शन यज्ञवादी है। इनके अनुसार इस विश्व के संपूर्ण मनुष्यों का एक लक्ष्य है और वह है पूर्ण और अखण्ड चेतना की प्राप्ति श्री अरविन्द ने पूर्वी और पश्चिमी दार्शनिक विचारधाराओं को भी समन्वित करने का प्रयास किया। इन्होने शंकर के मायावाद का खण्डन किंग और सृष्टि को सत्य मानते हुये पदार्थ को वास्तविक माना यह यर्थाथवादी दृष्टिकोण है. इन्होंने प्रकृति को भी मनुष्य के विकास क्रम के साथ-साथ रखा इससे उनके प्रकृतिवादी दृष्टिकोण का पता चलता है। बुद्धि को आत्मा को प्रकटीकरण मानकर इन्होने प्रयोजनवाद का भी स्पर्श किया है अतः स्पष्ट है कि श्री अरविन्द के दार्शनिक विचारों में विविध विचारधाराओं का समन्वय दिखाई पड़ता है।

श्री अरविन्द का शैक्षिक दर्शन - श्री अरविन्द के शिक्षा समबन्धी विचार कर्मयोगिन आदि पत्रिकाओं में लिखे उनके लेखों तथा नेशनल सिस्टम ऑफ एजुकेशन एवं ऑफ एजुकेशन नामक पुस्तको से पता चलते हैं। श्री अरविन्द ने स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान राष्ट्रीय शिक्षा की संकल्पना दी। इसके लिए उन्होंने प्राचीन वैदिक शिक्षा के साथ-साथ पाश्चात्य शिक्षा का समिश्रण किया परन्तु भारत की प्राचीन शिक्षा को ही शिक्षा की मुख्य विषय वस्तु बनाया। वे शिक्षा के द्वारा उग्र राष्ट्रीय विचारधारा का प्रतिपादित करना चाहते थे जिसमें वह काफी हद तक सफल भी होते है। श्री अरविन्द के विचारों पर उनके विस्तृत अध्ययन तथा विभिन्न संस्कृति की जानकारी का प्रभाव तो है ही साथ ही उन्होंने कम ही उम्र में पाश्चात्य दर्शन तथा साहित्य का अध्ययन किया था। ये प्लेटो तथा अरस्तु जैसे महान ग्रीक विचारकों के शिक्षा संबंधी विचारों से भलीभांति परिचित थे जिन्होंने कहा है कि शिक्षा ही राष्ट्रवाद की कुंजी है। श्री अरविन्द भविष्य के व्यक्ति थे, उन्होंने हमें वह मार्ग दिया है जो भविष्य की उस महिमा की ओर जाता है जिसे स्वयं दिव्य इच्छा ने गढ़ा है। श्री अरविन्द संसार को भविष्य के सौन्दर्य के बारे में बताने के लिए आए थे उस सौन्दर्य के बारे में जिसे अभी चरितार्थ होना था।श्री अरविन्द एक महान दार्शनिक के साथ-साथ उच्चकोटि के शिक्षाशास्त्री भी थे| उन्होने मानव जाति को सर्वोच्च अध्यात्मिक विकास का मार्ग दिखाया, आदर्शवादी होने के कारण श्री अरविन्द का शिक्षा दर्शन अध्यात्मिक साधना ब्रहमचर्य तथा योग पर आधारित है। उनका विश्वास था कि जिस शिक्षा में उक्त तीनो तत्व सम्मिलित होगे उससे मानव का पूर्ण विकास होना निश्चित है श्री अरविन्द ने अपने शिक्षा दर्शन में शारीरिक व नैतिक तथा धार्मिक शिक्षा को अत्याधिक महत्व प्रदान किया है इसलिए शिक्षा का महत्व बताते हुये वह कहते है यदि व्यक्ति की संपूर्णता को प्राप्त करना हमारा ध्येय है तो शारीरिक शिक्षा की अवेहलना नही की जा सकती, क्योंकि शरीर हमारे संपूर्ण विकास का भौतिक आधार है यह वह माध्यम अथवा उपकरण है जिसके प्रयोग द्वारा हम पूर्णता को प्राप्त करते हैं| श्री अरविन्द ने संर्वाग शिक्षा के अपने प्रत्यय को स्पष्ट करते हुये। कहा कि सर्वांग शिक्षा

आत्मा की शाश्वत पूर्णता की उपलब्धि है जिसे प्राप्त करना मनुष्य का लक्ष्य है| वह कहते है कि जब मनुष्य आत्मा की उस शाश्क्त पूर्णता को प्राप्त कर लेगा तब पृथ्वी पर दिव्य जीवन की स्थापना होगी जिससे सभी मनुष्यो की चेतना का स्तर उन्नत होगा| उनके मध्य मानवीय समबन्ध होगा और पृथ्वी पर मनुष्यों की उन्नत प्रजाति विकसित होगी. श्री अरविन्द के अनुसार सच्ची शिक्षा वह है जो बालक के समक्ष स्वतन्त्र वातावरण प्रस्तुत करें तथा उसकी रूचियों के अनुसार उसकी क्रियात्मक वैदिक नैतिक तथा सौन्दर्यात्मक शक्तियों को विकसित करके उसके अध्यात्मिक विकास में सहायता प्रदान करें. उन्होने स्वंय लिखा है सच्ची व वास्तविक शिक्षा वह है जो मानव की अर्न्तनिहित समस्त शक्तियों को विकसित करके उसे सफल बनाने में सहायता प्रदान करती है श्री अरविन्द भारत की प्रचलित शिक्षा के विरोधी थे उनके मतानुसार हमारी शिक्षा को आधुनिक जीवन की आवश्यक्तानुसार होना चाहिये दूसरे शब्दो में वे स्वयं लिखते हैं- सच्ची शिक्षा को मशीन से बना हुआ सूत नही होना चाहिये अपितु इसको मानव के मस्तिक,तथा आत्मा की शक्तियों का निर्माण अथवा जीवित उत्कर्ष करना चाहिये|

शिक्षा के उददेश्य:- श्री अरविन्द के अनुसार शिक्षा का मुख्य उददेश्य बालक में अर्न्तविहित जो सर्वोत्तम, शक्तिशाली है उसे अभिव्यक्त करना है, उसकी अन्तरंग प्रकृति को अभिव्यक्त करना है इसके अतिरिक्त शिक्षा के अन्य उददेश्य हैं-

शारीरिक विकास व शुद्धता- उनका विश्वास था **शरीरम् खल धर्म साधनम्** अर्थात शरीर के माध्यम से ही धर्म की साधना होती है, अतः उन्होंने बालक के शरीरिक विकास पर ही बल दिया अपितु इसके अर्न्तगत शारीरिक शुद्धि को भी सम्मिलित किया।

ज्ञानेन्द्रियों का विकास- श्री अरविन्द ने ज्ञानेन्द्रियों के प्रशिक्षण पर विशेष बल दिया और कहा योगाभ्यास की क्रिया से नाड़ी शुद्धि से इन्द्रियों की गति को तीव्र किया जा सकता है नाड़ी शुद्धि स्थिरता लाती है और मन शुद्धि की तैयारी आरंभ होती है मन मुख्य रूप से विचार का सीधा संस्कार लेता है बुद्धि चित को आदेश देती है, इस प्रकार इन्द्रिय प्रशिक्षण शिक्षा का मुख्य उददेश्य है शिक्षण के निर्देशन में बालक को इनके उपयुक्त उपयोग के लिये प्रशिक्षण किया जाना चाहिये ।

मानसिक शक्ति का विकास- मानसिक विकास से उनका तात्पर्य स्मृति, चिन्तन, तर्क, कल्पना तथा निर्णय आदि सभी मानसिक शक्तियों से था।

नैतिक प्रशिक्षण- श्री अरविन्द के अनुसार मन के प्रशिक्षण के लिए पाठ्यक्रम तय कर देना सरल है |नैतिक प्रशिक्षण की व्यवस्था दुष्कर कार्य है उनके अनुसार शिक्षण के आदर्शों को इतना उत्तम होना चाहिये कि बालक उनका हृदय से अनुकरण करके जीवन की उच्चतम अवस्थाओं को प्राप्त करें।

अन्तःकरण का विकास- शिक्षा का प्रमुख एवं महत्त्वपूर्ण उददेश्य है अन्तःकरण का विकास करना |अन्तःकरण के चार स्वर हैं- चित्त मानस, बुद्धि तथा ज्ञान, शिक्षा को उक्त चार स्तरों का विकास ही अन्तःकरण का विकास है।

अध्यात्मिक विकास- उनके अनुसार प्रत्येक व्यक्ति मे कुछ देवीय अंश होता है, शिक्षा के द्वारा इस दैवीय अंश को खोज द्वारा विकसित करके उसे अध्यात्मिक पूर्णता की ओर अग्रसर किया जा सकता है।

पाठ्यक्रम व शिक्षण विधियों- श्री अरविन्द में शिक्षा के जिन उददेश्यों का प्रतिपादन किया उनकी प्राप्ति के लिये एक विस्तृत पाठ्यचर्चा भी प्रस्तुत की है|इन्होने भौतिक विषयों में मातृभाषा एवं राष्ट्रीय व अर्न्तराष्ट्रीय महत्व की भाषायें इतिहास ,भूगोल, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, गणित ,विज्ञान, मनोविज्ञान, स्वास्थ्य विज्ञान, भूगर्भविज्ञान, कृषि, उद्योग, वाणिज्य, एवं कला, भौतिक क्रियाओं में खेलकूद, व्यायाम,उत्पादन कार्य शिल्प अध्यात्मिक विषयों में वेद, गीता, उपनिषद धर्मनिषद, धर्मशास्त्र, नीतिशास्त्र, ध्यानयोग,भजन को स्थान दिया

है। साथ ही शिक्षा के विभिन्न स्तरों के लिये भिन्न पाठ्यचर्चा प्रस्तावित की है। श्री अरविन्द ने करके सीखना, मौखिक विज्ञान, स्वाध्याय विधि ,रूचिनुसार शिक्षण विधि पर विशेष बल दिया है।

शिक्षक का स्थान- शिक्षक के स्थान के समबन्ध में श्री अरविन्द ने स्वयं ही लिखा है "शिक्षण निर्देशक अथवा स्वामी नही है अपितु वह केवल सहायक तथा पथप्रदर्शक है। उसका कार्य सुझाव देना है न कि ज्ञान को थोपना|" अरविन्द शिक्षक का महत्व प्रकट करते हुए कहते थे कि शिक्षक प्रशिक्षक नहीं है, वह तो सहायक एवं पथप्रदर्शक है। वह केवल ज्ञान ही नहीं देता बल्कि वह ज्ञान प्राप्त करने की दिशा भी दिखलाता है। वे शिक्षकों से यह आशा करते थे किवे बच्चो को भौतिक ज्ञान की प्राप्ति में सहायता करने के साथ-साथ उसकी आत्मा का भी विकास करें श्री अरविन्द के अनुसार यह कार्य कर्मयोगी एवं ध्यानयोगी शिक्षक ही कर सकते हैं।

अनुशासन- श्री अरविन्द के अनुसार बालक में ज्ञान अर्न्तनिहित है उसमें दिव्यशक्ति अर्न्तनिहित है. और वह स्वयं के प्रयास से शिक्षक के मार्गदर्शन में इसका विकास करता है। बालक पर बाहर से कुछ नही थोपा जाता श्री अरविन्द आत्मानुसार के पक्षधर है| अतिमानव की अवस्था आत्मानुसार के पक्षधर हैं| अतिमानव की अवस्था आत्मानुशासन का सर्वोच्च स्तर है| योगाभ्यास आत्मानुशासन में बहुत सहायक है क्योंकि इसके माध्यम से इन्द्रियों एवं मन पर नियंत्रण एवं चित्त की शुद्धि संभव है।

श्री अरविन्द के शैक्षिक दर्शन की वर्तमान समय में उपयोगिता- वर्तमान में भारत जिस धर्म और राजनीति में उलझा हुआ है तथा एक नाजुक दौर से गुजर रहा है, ऐसे समय में श्री अरविंद के विचार तथा उनकी अवधारणाएँ बहुत महत्त्वपूर्ण हैं क्योंकि उनके विचार आज भी इन सभी क्षेत्रों में प्रांसगिक है तथा उनकी उपयोगिता वर्तमान की सभी समस्याओं में निहित है। श्री अरविंद के जीवन का लक्ष्य था-चेतना का विकास और इसकी प्राप्ति श्री अरविन्द द्वारा बताई गई शिक्षा पद्धति द्वारा ही संभव है ।वर्तमान के भारतीय परिप्रेक्ष्य में प्रत्येक व्यक्ति अपने अधिकारों के प्रति जागरूक है लेकिन अपने समाज एवं राज्य के प्रति अपने कर्त्तव्यों के प्रति सजग नहीं है। अधिकारों के परस्पर विरोधी सिद्धांत पनप रहे हैं, किन्तु कर्त्तव्यों और दायित्वों के पालन के प्रति विशेष अभिरूचि का अभाव है। प्रत्येक व्यक्ति को कर्त्तव्य जागरूकता के ज्ञान के परिप्रेक्ष्य में अरविन्द की शिक्षा पद्धति अत्यन्त उपयोगी एवं प्रासंगिक है।वर्तमान में युवा प्रेरणा स्रोत एवं युवाओं के वर्तमान जीवन चरित्र को अधिक उत्कृष्ठ बनाने में श्री अरविन्द की शिक्षा दर्शन की अत्यंत प्रासंगिकता है। श्री अरविंद ने भारत के युवा लोगों को विश्वास दिलाया कि स्वार्थ रहित कर्ममय जीवन से ही व्यक्ति और राष्ट्र दोनों का विकास हो सकता हैं। भारत के युवाओं को जिन समस्याओं से संघर्ष करना पड़ रहा तथा विद्यार्थियों में जो अनुशासनहीनता दिखाई पड़ती है उसे श्री अरविंद के शैक्षिक चिंतन को स्वीकार करने से बहुत हद तक कम किया जा सकता है क्योंकि श्री अरविंद ने केवल अधिकारों के लिए संघर्ष करने की अपेक्षा अपने कर्त्तव्यों को विशेष महत्त्व दिया तथा राष्ट्रवाद को हमेशा सर्वोपरि रखा। किसी भी देश के चरित्र निर्माण में मुख्य भूमिका उसकी शिक्षा पद्धति की है। शिक्षा के क्षेत्र में भी श्री अरविन्दों के विचार वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अत्यंत प्रासंगिक है।

उपसंहार- श्री अरविन्द के शैक्षिक दर्शन पर उनके जीवन दर्शन का प्रभाव रहा और उनके जीवन दर्शन पर वेद उपनिषाद गीता का सर्वाधिक प्रभाव है|श्री अरविन्द एक एसी भारतीय शिक्षा प्रणाली का प्रतिपादन करना चाहते थे जिसके द्वारा बालक न केवल इन्सान बने बल्कि अपने दिव्य रूप का ज्ञान प्राप्त कर उसका विकास कर सके ऐसी उच्च आदर्श शिक्षा प्रणाली के प्रवर्तक थे| श्री अरविन्दवास्तव में श्री अरविन्द ने अपनी सूक्ष्म दृष्टि से भारतीय शिक्षा प्रणाली में व्याप्त पुरातन तथ्यो को देख कर उसमे नवीनता लेने का समर्थन किया| शिक्षा को बालकेन्द्रित बनाना, रूचि व प्रकृति के अनुरूप शिक्षा प्रदान करना, शिक्षक को मार्गदर्शक व सहायक मानना ,आत्मानुशासन की अवधारणा को महत्व प्रदान करना, पाठ्यक्रम को न केवल भारतीय परम्परा व अर्न्तराष्ट्रीय भावना के समन्वय का रूप प्रदान करना उनके शैक्षिक दर्शन की प्रमुख

विशेषतायें है श्री अरविन्द ने अनुभव किया कि भारतीयों का दृष्टिकोण शनैःशनै भौतिकतावादी होता जा रहा है जिससे उनके भीतर की दिव्य ज्योति बुझती जा रही है। उन्होने कहा भारत को ऐसी शिक्षा की आवश्यक्ता है जो भारतीयों के मस्तिक तथा आत्मा की शक्ति का निर्माण तथा जीवित उत्कर्ष कर सके |इस दृष्टि से श्री अरविन्द ने पांडिचेरी में अरविन्द आश्रम खोला जिससे अर्न्तराष्ट्रीय विश्वविद्यालय की स्थापना की तथा नये सिद्धान्तों पर आधारित करके शिक्षा को नवीन रूप में भारतीय जनता के सम्मुख रखा जो बालक के स्वाभावानुकूल हो तथा जो ब्रहमचर्य द्वारा तप, तेज एवं विद्युत की वृद्धि से बालको के मन, शरीर ,हृदय तथा आत्मा को सशक्त बना सके। संभवतया इसीलिये श्री अरविन्द के शिक्षा दर्शन पर टिप्पणी करते हुये डा० आर०एस० मणि ने लिखा है"श्री अरविन्द का शिक्षा दर्शन मनुष्य की सम्सत शक्ति के उत्कर्ष तथा अधिक से अधिक पूर्ण विकास के सिद्धान्त पर आधारित है" शिक्षा के क्षेत्र में उनके विचार यह सिद्ध करते हैं कि श्री अरविन्द हमारे देश के प्रमुख व प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्रियों में से थे|

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची-

- पचौरी गिरीश (2003) उदीयमान भारतीय समाज मे शिक्षा इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस मेरठ उ०प्र०
- सक्सेना एवं चर्तुवेदी (2010) उदीयमान भारतीय समाज मे शिक्षक आर०लाल बुक डिपो मेरठ उ०प्र०
- शर्मा डी०एल० (2008) शिक्षा तथा भारतीय समाज आर०लाल बुक डिपो मेरठ उ०प्र०
- राठौर कुसुमलता (2010) उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक आर०लाल बुक डिपो मेरठ उ०प्र०
- लाल एवं पलोड़ (2007) शैक्षिक चिन्तन एवं प्रयोग आर०लाल बुक डिपो मेरठ उ०प्र०
- प्रदीप नारंग एवं वंदना अग्निशिखा, अखिल भारतीय पत्रिका स्वाधीन चैटजी पांडिचेरी अंक फरवरी 2018 पृ. 30-31
- वर्मा वी.पी. आधुनिक भारतीय राजनैतिक विचारक 2017लक्ष्मीनारायण अग्रवाल प्रकाशक आगरा पृ. 351
- प्रदीप नारंग एवं वंदना अग्निशिखा अखिल भारतीय पत्रिका स्वाधीन चैटजी पांडिचेरी अंक सितम्बर 2017 40-41
- बसंत कुमार लाल समकालीन भारतीय दर्शन मोतीलाल बनारसी दास दिल्ली वाराणसी पटना 2016 पृ. 74-75
- रविन्द्र श्री अरविन्द जीवन और दर्शन 1980 श्री अरविन्द सोसायटी पांडिचेरी पृ. 18 22 83
- सिंह शिवप्रसाद उत्तर योगी श्री अरविन्द जीवन एवं दर्शन,संस्करण-2017
- . नागर पुरूषोत्तम आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक विचार 2016
- . शिक्षा श्री अरविन्द आश्रम पांडिचेरी पृ. 12-15 18 37 38 एवं 48/
- मंगेश नाडकर्णी सावित्री 9 मई 2011. पृ. 3 एवं 101 11. राजस्थान पत्रिका जयपुर अंक 2000
- अन्तिम परिवर्तन 22 सितम्बर 2014
- दैनिक भास्कर, 16 अप्रेल 2018

SHIKSHA SAMVAD

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed or Refereed Research Journal
ISSN: 2584-0983 (Online) Impact-Factor, RPRI-3.87
Volume-01, Issue-04, June- 2024
www.shikshasamvad.com
Certificate Number-June-2024/07

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

डॉ० अवन्तिका मिश्रा

For publication of research paper title

"श्री अरविन्द का शैक्षिक दर्शन"

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-01, Issue-04, Month June, Year- 2024, Impact-Factor, RPRI-3.87.

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.shikshasamvad.com